IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 3, December 2023

# पं. दीनदयाल उपाध्याय के दर्शन पर आधारित शैक्षिक उद्देश्यों का विवेचनात्मक अध्ययन

**डॉ. गीतू गुप्ता[1] व डॉ. युद्धवीर सिंह[2]**
विभागाध्यक्ष, स्ववित्तपोषित बी. एड.,
स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थान सिंह रावत राजकीय महाविद्यालय, नैनीडांडा, पौड़ी गढ़वाल[1]
प्राचार्य, कुकरेजा इन्स्टीट्यूट ऑफ टीचर एजूकेशन, देहरादून[2]

**सारांश**

शिक्षा का वास्तविक अर्थ मनुष्य को मानव बनाना तथा जीवन को प्रगतिशील, सांस्कृतिक एवं सभ्य बनाना है। शिक्षा द्वारा ही मनुष्य अपनी विचार शक्ति, तर्क शक्ति, समस्या समाधान तथा बौद्धिकता, प्रतिभा, रूझान, धनात्मक भावुकता तथा कुशलता और अच्छे मूल्यों तथा रूचियों को विकसित करता है। शिक्षा के द्वारा ही वह मानवीय, सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक प्राणी में परिवर्तित हो जाता है। पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार शिक्षा सम्बन्ध जितना व्यक्ति से है उससे अधिक समाज से है। हम ऐसे मानव की कल्पना कर सकते है, जिसे किसी भी प्रकार की शिक्षा न मिली हो; और जो अपनी सहज प्रवृत्तियों के सहारे ही जीवन यापन करता हो, किन्तु बिना शिक्षा के समाज संभव नही है। **जॉनबुकन** – "हम भूत के ऋण से उऋण हो सकते है, यदि हम भविष्य को अपना ऋणी बनायें।" दीनदयाल जी ने भारतीय दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए तथा पाश्चात्य दृष्टिकोण के समन्वय पर विचार देते हुए शिक्षा के विभिन्न उद्देश्य पर बल दिया है। पुरूषार्थ की प्राप्ति, उत्पादनशीलता का विकास, चरित्र एवं नैतिकता का निर्माण,
सामाजिक नैतिकता का विकास, राष्ट्रीयता का विकास, जीवन मूल्यों का विकास, सर्वांगीण विकास, सास्कृतिक विकास, नेतृत्व की भावना का विकास आदि।

**संकेत शब्द** – शिक्षा, शैक्षिक उद्देश्य, शिक्षा का लोकतन्त्रात्मक स्वरूप, पुरूषार्थ, उत्पादनशीलता, सामाजिक नैतिकता, जीवन मूल्य, राष्ट्रीयता।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

- भिषीकर, चन्द्रशेखर परमानन्दः1991, द्वितीय संस्करण, "पं0 दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन" खण्ड–5 (राष्ट्र की अवधारणा), सुरुचि प्रकाशन, झण्डेवालान, नईदिल्ली–110055
- देवधर, विश्वनाथ नारायणः1987, प्रथम संस्करण ,"पं0 दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन", खण्ड–7 (व्यक्ति दर्शन), सुरुचि प्रकाशन, झण्डेवालान, नईदिल्ली–110055
- गुप्त, तनसुखरामः2005, प्रथम संस्करण,"पं0 दीनदयाल उपाध्याय महाप्रस्थान", सूर्य भारती प्रकाशन,नई दिल्ली–110006
- गर्ग, पंकज कुमारः2003, (सित0–अक्टू0),अंक–55,"दयाल पत्रिका",पं0 दीनदयाल उपाध्याय संस्थान (रजि0), मेरठ–250001
- गर्ग ,पंकज कुमारः2005, (सित0–अक्टू0),अंक–66,,"दयाल पत्रिका",पं0 दीनदयाल उपाध्याय संस्थान (रजि0), मेरठ–250001

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 3, December 2023


- गर्ग, पंकज कुमार:2005, (नव0–दिस0),अंक–67,,"दयाल पत्रिका",पं0 दीनदयाल उपाध्याय संस्थान (रजि0), मेरठ–250001
- गर्ग, पंकज कुमार:2006, (जन0–फर0),अंक–68,"दयाल पत्रिका",पं0 दीनदयाल उपाध्याय संस्थान(रजि0), मेरठ–250001
- गर्ग, पंकज कुमार:2006 ,(मार्च–अप्रैल0),अंक–69,"दयाल पत्रिका",पं0 दीनदयाल उपाध्याय संस्थान(रजि0), मेरठ–250001
- जोग, बलवन्त नारायण:1991, "पं0 दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन",खण्ड–6, सुरुचि प्रकाशन,झण्डेवालान, नईदिल्ली–110055
- कुलकर्णी, शरद अनन्त:1991, द्वितीय संस्करण ,"पं0 दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन", खण्ड–4,सुरुचि प्रकाशन, झण्डेवालान, नईदिल्ली–110055
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार।
- शर्मा, हरीदत्त:2005 ,"पं0 दीनदयाल उपाध्याय (राष्ट्रीय जीवन माला)", डायमण्ड पाकेट बुक्स, एक्स–30 ओखला फेज सैकेण्ड, नई दिल्ली
- शर्मा, महेश चन्द्र:2004, द्वितीय संस्करण, "पं0 दीनदयाल उपाध्याय" सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत पटियाला हाउस, नई दिल्ली–110001
- शर्मा रामनाथ व शर्मा राजेन्द्र कुमार:2006, द्वितीय संस्करण, "शिक्षा दर्शन", एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटरर्स, बी–2,विशाल एन्क्लेव,नईदिल्ली–110027
- ठेंगड़ी दत्तोपन्त:1991, द्वितीय संस्करण, "पं0 दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन", खण्ड–1
- (तत्वजिज्ञासा), सुरुचि प्रकाशन, झण्डेवालान, नईदिल्ली–110055 तिवारी, केदारनाथ:2006, पंचम् संस्करण, "तत्व मीमांसा एवं ज्ञानमीमांसा", मोतीलाल बनारसीदास, 41,यू0ए0बंग्ला रोड,जवाहरनगर, दिल्ली–110077
- उपाध्याय,दीनदयाल:2007, दशम् संस्करण, "राष्ट्र जीवन की दिशा", लोकहित प्रकाशन, संस्कृति भवन राजेन्द्रनगर,लखनऊ–226004
- उपाध्याय,दीनदयाल:2007, अष्टम् संस्करण, "राष्ट्र चिन्तन", लोकहित प्रकाशन, संस्कृति भवन राजेन्द्रनगर,लखनऊ–226004
- उपाध्याय, दीनदयाल:2004, नवम् संस्करण, "एकात्म मानववाद", जागृति प्रकाशन,नोएडा–201301
- उपाध्याय, दीनदयाल:1991, द्वितीय संस्करण, "पोलिटिकल डायरी" सुरुचि प्रकाशन, झण्डेवालान, नई दिल्ली–110055